बाइबल टीचर

वर्ष 16 दिसम्बर 2018 अंक 1

सम्पादकीय

क्या आप सेवा करने वाले लीडर है?

अच्छे चर्च लीडर यीशु के पीछे चलकर उसका अनुसरन करते हैं। उनका स्वभाव यीशु जैसा होता है, जैसे कि पौलुस कहता है, ''जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा वरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आपको दीन किया और यहां तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु हां क्रूस की मृत्यु भी सह ली।'' (फिलि. 2:5-8) यीशु एक बहुत अच्छा लीडर था। इसलिये प्रत्येक चर्च लीडर को यीशु के समान बनना चाहिए। परन्तु ऐसा देखने को बहुत कम मिलता है। प्रभु यीशु ने अपने जीवन से करके दिखाया कि वास्तव में लोगों की सेवा कैसे करनी चाहिए?

यीशु में दीनता भरी हुई थी इसलिये उसने कहा था कि जो भी मैं करता हूं वो अपने पिता की आज्ञा से करता हूं (यूहन्ना 5:9)। उसने कहा था, कि वह परमेश्वर के अधिकार से बोलता है। (यूहन्ना 7:16)।

यीशु ने यह भी कहा था कि मैं अपनी नहीं परन्तु अपने पिता की इच्छा पूरी करने आया हूं (यूहन्ना 8:28)। यीशु ने पूरी तरह से अपने पिता की आज्ञा को माना। (यूहन्ना 6:38)। उसने अपने बारह चेलों को चुना जो कि अच्छे लीडर थे। मूसा भी एक अच्छा लीडर था और बाइबल हमें बताती है कि वह बहुत नम्र व्यक्ति था। जो अच्छे अगुवे होते हैं वे जवान लोगों को चर्च के कार्यों में भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करते हैं। प्रेरित पौलुस में यह बात थी। उसने तीमुथियुस तथा तीतूस को बहुत प्रोत्साहित किया था। यह इसलिये भी था क्योंकि पौलुस ने उनके सामने एक अच्छा उदाहरण रखा था तथा 1 कुरि. 11:1 में उसने कहा था, ''तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं मसीह की सी चाल चलता हूं। जो लोग चर्च में अगुवाई करते हैं उन्हें नम्रता से परिपूर्ण होना चाहिए तथा पूरी ईमानदारी से कलीसिया की अगुवाई करनी चाहिए। अगुवाई करना हम धीरे-धीरे सीखते हैं। यह एक दम से नहीं आती। इसमें समय तथा अनुभव की आवश्यकता पड़ती है। जो अगुवा सच्चे मन से अगुवाई करता है वह यीशु मसीह के पीछे सच्चाई से चलता है।

कई बार ऐसा समझा जाता है कि वही लीडर बढ़िया होते हैं जो अच्छा प्रचार करते या अच्छे कपड़े पहिनते हैं। परन्तु साधारण लोग भी अच्छे लीडर होते हैं। यदि आपका जीवन अच्छा है तो आप अच्छी तरह से अगुवाई कर सकते हैं। सबसे बड़ी बात है आपका अपना अच्छा उदाहरण।

जो लोग अच्छी अगुवाई करते हैं वे बाइबल अनुसार अपने काम को करते हैं। कई बार चर्च के लीडर अपने कार्यों को भली-भांति नहीं कर पाते। तथा कई बार ऐसा भी होता है कि उनकी अगुवाई में नम्रता नहीं होती। ऐसा भी देखने में आता है जब कलीसिया में कोई समस्या उत्पन्न होती है तो वे उसे अच्छी तरह संभाल नहीं पाते तथा कई बार कुछ सदस्य कलीसिया से भी चले जाते हैं। कभी भी जब कलीसिया में कोई समस्या होती है तो सब अगुवों को मिलकर इसका समाधान ढूढ़ना चाहिए। उन्हें कलीसिया के भाई-बहिनों की भावनाओं को समझना चाहिए।

जब यीशु अपने चेलों के साथ अंतिम भोजन कर रहा था तब उसके चेले आपस में बहस कर रहे थे कि हम में से कौन बड़ा है? (लूका 22:24)। वे जब आपस में विवाद कर रहे थे तब यीशु ने उन्हें एक उदाहरण करके दिखाया। यीशु ने उन्हें सिखाया कि सच्चा लीडर कौन होताहै? यीशु उनका प्रभु था और जो यीशु ने करके दिखाया वे कभी सोच भी नहीं सकते थे। यीशु ने तौलिया लिया तथा एक बर्तन में पानी लिया तथा एक दास की तरह उनके पांव धोने लगा। (यूहन्ना 13:3-17)। यहां यीशु ने उन्हें सिखाया एक नम्रता का पाठ अर्थात एक चर्च के लीडर को कैसा होना चाहिए।

मसीह के राज्य अर्थात कलीसिया में वही बड़ा है जो अपने महत्व को नहीं सोचता। वह यह नहीं सोचता कि मैं बहुत बड़ा हूं बल्कि उसका व्यवहार नम्रतापूर्ण तथा एक छोटे बच्चे के समान होता है। (मत्ती 18:1-4)।

हमें देखना चाहिए कि संसारिक लीडर और चर्च लीडर में बहुत अन्तर है। यीशु ने कहा था संसारिक लीडर दूसरों पर आज्ञा चलाते हैं परन्तु मसीही लीडर ऐसे नहीं होते।

कलीसिया के अगुवों में सेवा भावना होती है। परन्तु कई स्थानों पर यह बात देखने को नहीं मिलती। बाइबल से हम सीखते हैं कि चर्च के अगुवों को कैसा होना चाहिए? अच्छे अगुवे दूसरों की सेवा में अपना समय लगाते हैं। जब कोई अगुवा ऐसा व्यवहार रखता है तब उसका सदस्यों के साथ भाईचारा बढ़ जाता है। (मरकुस 10:45)।

पांव धोने की वो रात आज सारे चर्च के अगुवों को यह बात सीखाती है कि प्रत्येक लीडर में दीनता तथा सेवा भावना होनी चाहिए। (लूका 22:26)। और दूसरी बात यह कि सेवा करने से आप छोटे नहीं बन जाओगे। या आपका अधिकार आपसे ले लिया नहीं जायेगा। यीशु के पास सारा अधिकार था परन्तु फिर भी वह दास बना। (1 पतरस 5:2-3)। क्या आप यीशु के समान अगुवे हैं? यदि नहीं तो मेरे दोस्त, बनने का प्रयास कीजिये। क्या आप प्रभु की सेवा मन से करना चाहते है? यदि हां तो यीशु के समान एक नम्र अगुवा बनिये। कलीसिया को ऐसे अगुवों की आवश्यकता है जो मन में दीन है तथा यीशु की तरह जिनका स्वभाव है।

क्या मसीह एक हज़ार वर्ष तक राज्य करने के लिये पृथ्वी पर आएगा?

सनी डेविड

प्रभु यीशु मसीह, जिसके सुसमाचार का प्रचार में प्रतिदिन करता हूं, करीब दो हजार साल पहले एक इंसान के रूप में जमीन पर आया था। बाइबल में कई जगह यीशु मसीह को ईश्वर या परमेश्वर कहकर संबोधित किया गया है। क्योंकि वास्तव में, वह मसीह यीशु, जो मनुष्य के रूप में प्रकट हुआ था, परमेश्वर ही था। वह परमेश्वर में एक व्यक्तित्व था। लेकिन परमेश्वर की योजना अनुसार, मसीह ने, परमेश्वर को स्वर्ग में छोड़कर, पृथ्वी पर आना स्वीकार कर लिया था। वह पृथ्वी पर इसलिये आया था, ताकि वह सारी मानवता के लिये अपने आप को बलिदान कर दे। क्योंकि वह संसार में हर एक जन को पाप से मुक्त होकर स्वर्ग में प्रवेश करने का अवसर देना चाहता था। वह पृथ्वी पर लोगों को दण्ड देने के लिये नहीं आया था, पर वह लोगों का उन के पापों से उद्धार करने को आया था।

और बाइबल हमें बताती है, कि एक दिन प्रभु फिर से वापस आएगा। पर एक बात बाइबल में इस संबंध स्पष्ट रूप से बताई गई है, और वह यह कि मसीह दोबारा इस संसार में, इस पृथ्वी पर नहीं आएगा। क्योंकि इस पृथ्वी पर उसके वापस आने का अब कोई उद्देश्य नहीं है। उसने मनुष्यों के उद्धार पाने का काम पूरा कर दिया है। इसलिये, अब जब वह दोबारा आएगा, तो बाइबल में लिखा है, कि वह उन लोगों को अपने साथ ले जाने के लिये आएगा, जिन्होंने उस पर विश्वास करके उसके सुसमाचार को माना है, और अपना जीवन उसके मार्ग पर चलकर व्यतीत किया है।

पर क्या वह उन्हें लेने पृथ्वी पर आएगा? नहीं। तो फिर वह अपने लोगों से कहां मिलेगा? बाइबल में लिखा है, कि जब मसीह दोबारा आएगा, तो वह आकाश में बादलों पर आएगा। और उसके लोग ऊपर उठा लिये जाएंगे ताकि वे ऊपर हवा में अपने प्रभु से मिलें, और वह उन्हें अपने साथ ले जाएगा। बाइबल के नए नियम में, 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18 पदों में प्रेरित पौलुस ने प्रभु के अनुयायीयों को लिखकर इस प्रकार कहा था कि: "हे भाइयो, हम नहीं चाहते, कि तुम उन के विषय में जो सोते हैं, अज्ञात रहो; ऐसा न हो, कि तुम और लोगों की तरह शोक करो जिन्हें आशा नहीं। क्योंकि यदि हम जानते हैं कि यीशु मरा, और जी भी उठा, तो वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो मसीह में सो गए हैं, उसी के साथ ले आएगा। क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं, कि हम जो जीवित हैं, और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे, तो सोए हुओं से कभी आगे नही बढ़ेंगे। क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उनके साथ बादलों पर उठा लिये जाएंगे, कि

हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे। सो इन बातों से एक दूसरे को शांति दिया करो।"

ये बातें प्रेरित पौलुस ने मसीह के अनुयायीयों को आज से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व लिखी थी। और इन सब को सोए या मरे हुए आज लगभग दो हज़ार वर्ष हो चुके हैं। लेकिन प्रभु के प्रेरित ने कहा था, कि जब प्रभु आएगा, तो जो लोग मसीह में मरे हैं वे पहले जी उठेंगे। ओर तब जो उस समय जिन्दा और बचे रहेंगे, वे उनके साथ अर्थात प्रभु के वे अनुयायी जो जीवित हो उठेंगे, उनके साथ बादलों पर उठा लिये जाएंगे, ताकि हवा में प्रभु से मिलें और फिर सदा उसके साथ स्वर्ग में रहें।

इसी तरह से प्रेरित पतरस ने, पतरस की दूसरी पत्री के तीसरे अध्याय की 8 से 10 आयतों में लिखकर यूं कहा था, कि, "हे प्रियो, यह एक बात तुम से छिपी न रहे, कि प्रभु के यहां एक दिन हजार वर्ष के बराबर है, और हजार वर्ष एक दिन के बराबर है। प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कितने लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरत धरता है, और नहीं चाहता कि कोई नाश हो; पर यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले। परन्तु प्रभु का दिन चोर की तरह आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़ बड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा, और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएंगे, और पृथ्वी और उस पर के सब काम जल जाएंगे।"

सो इस प्रकार से हम बाइबल से यह सीखते हैं, कि जिस दिन प्रभु यीशु का दोबारा आना होगा, उस दिन आकाश में जो कुछ भी है सब कुछ तप्त होकर पिघल जाएगा, और ऐसे ही पृथ्वी और जो कुछ पृथ्वी पर है सब कुछ जलकर समाप्त हो जाएगा। क्योंकि वह दिन जगत के अंत का दिन होगा। उस दिन प्रभु जगत का न्याय करने का प्रकट होगा। आकाश और आकाश में जो कुछ भी हम देखते हैं, अर्थात सूरज, चांद, और सितारे; और ऐसे ही पृथ्वी और जो कुछ भी हम पृथ्वी पर देखते हें, ये सब कुछ मनुष्य के लिये ही परमेश्वर ने बनाए थे। किन्तु, जब प्रभु के आने से सारी मानवता का ही अंत हो जाएगा, तो फिर इन सबका क्या प्रयोजन रहेगा? यही कारण है, कि क्यों बाइबल में लिखा है, कि प्रभु जब भी आए तो वह ऊपर बादलों पर आएगा और उसके लोग सब ऊपर उठाए जाएंगे, जहां वे प्रभु से मिलेंगे और उसके साथ हमेशा का जीवन पाने के लिये स्वर्ग में प्रवेश करेंगे। इसलिये, प्रभु अब पृथ्वी पर कभी नहीं आएगा। क्योंकि पृथ्वी पर आने का प्रभु का अब कोई मकसद ही नहीं है।

पर फिर भी, कुछ लोग आज यह सिखाते फिर रहे हैं, कि प्रभु यीशु इस पृथ्वी पर आएगा और यहां आकर एक हजार वर्ष तक राज्य करेगा। अभी सन् 2000 की शुरूआत हुई थी, तो बहुतेरे लोग दुनिया भर में सिखाने लगे थे, कि अब सन् 2000 शुरू होते ही प्रभु यीशु मसीह पृथ्वी पर एक हजार साल तक राज्य करने को आएगा। और अकसर बहुत से भोले-भाले नासमझ लोग ऐसे-ऐसे लोगों की बातों में आ जाते हैं। किन्तु, वास्तव में, ऐसे लोग, जो ऐसी-ऐसी बातें सिखाते हैं, खुद नासमझ है, वे स्वयं बाइबल की शिक्षा को ठीक से नहीं समझते। बाइबल की स्पष्ट शिक्षाओं का तो वे विरोध करते ही है, पर जिन बातों को बाइबल में नहीं सिखाया गया है, उन बातों का वे समर्थन करते है। जैसे कि, प्रभु यीशु ने स्वयं कहा था, मरकुस 16:16

में, कि जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। पर वे कहते हैं, कि उद्धार पाने के लिये बपतिस्मा लेने की आवश्यकता नहीं है–केवल विश्वास करने से ही उद्धार मिल जाएगा। ऐसे ही, जब भी बाइबल कहती है, जैसे कि अभी हम ने पढ़ा था, कि जब प्रभु यीशु न्याय करने को आएगा तो आकाश और पृथ्वी जाते रहेंगे; और प्रभु ऊपर हवा में, वातावरण में प्रकट होगा। पर वे कहते है कि प्रभु पृथ्वी पर एक हजार वर्ष के लिए राज्य करने को आएगा।

अब वे ऐसा क्यों सिखाते हैं? उनके कथनानुसार क्योंकि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के 20वें अध्याय में ऐसा लिखा है। क्या लिखा है वहां? आइए हम प्रकाशितवाक्य 20:4 पद को पढ़ें; यहां यूहन्ना प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का लिखने वाला, प्रभु यीशु के उन अनुयायीयों को लिख रहा है; जो रोम के राजा के द्वारा पहली शताब्दी में, मसीह में अपने विश्वास के कारण सताए जा रहे थे; और उन में से सैकेड़ों को मौत के घाट उतारा जा चुका था; उनको प्रभु की ओर से ढांढ़स और सान्तवना का संदेश देकर यूहन्ना ने कहा था, कि "फिर मैंने सिंहासन देखे, और उन पर लोग बैठ गए, और उनको न्याय करने का अधिकार दिया गया; और उनकी आत्माओं को भी देखा, जिनके सिर यीशु की गवाही देने और परमेश्वर के वचन के कारण काटे गए थे; और जिन्होंने न उस पशु की, और न उसकी मूरत की पूजा की थी, और न उसकी छाप अपने माथे और हाथों पर ली थी; वे जीवित होकर मसीह के साथ हजार वर्ष तक राज्य करते रहे।"

अब यहां इस बात पर ध्यान दें, कि राज्य कौन करने लगे? बाइबल में लिखा है, कि पहली शताब्दी के वे मसीही लोग जिसके सिर यीशु की गवाही देने के कारण और परमेश्वर के वचन के कारण काटे गए थे। उन्होंने रोम के राजा की प्रतिमा के आगे अपना सिर नहीं झुकाया था और न उस के कहलाने जाने के लिये उसकी छाप अपने हाथों पर ली थी। वे लोग मसीह के साथ राज्य करने लगे। यहां ऐसा तो लिखा ही नहीं है, कि मसीह ने एक हजार वर्ष तक राज्य किया था, या वह एक हजार वर्ष तक राज्य करेगा। और एक हजार वर्ष परमेश्वर के सामने क्या है? जैसे कि अभी हमने बाइबल में से पढ़ा था कि हजार वर्ष उसके सामने एक दिन के बराबर है। यानि वर्ष, महीने और हफ्ते परमेश्वर के सामने कुछ भी नहीं है।

सो राज्य कौन करने लगा? वे मसीही जिनके सिर उसकी गवाही देने के कारण काटे गए थे। वे मसीह के साथ राज्य करने लगे। अगर मैं आपसे कहूं कि मैं आपके यहां आकर आपके साथ एक वर्ष तक रहूंगा। तो इसका अर्थ क्या हुआ? क्या इसका अर्थ यह हुआ कि आप वहां एक वर्ष तक रहेंगे? अब आप तो वहां पहले से ही रह रहे हैं, और जब मैं अपने यहां वापस लौट कर आ जाऊंगा तब भी आप रहते रहेंगे। ऐसे ही प्रभु यीशु मसीह का राज्य भी है। उसने कहा था, कि उसका राज्य उसके प्रेरितों के जीवनकाल में ही अर्थात पहली शताब्दी में ही पृथ्वी पर आ जाएगा, जैसा कि हम मरकुस 9:1 में पढ़ते हैं। और वास्तव में ऐसा ही हुआ भी था जब उसकी कलीसिया की स्थापना हुई थी। आज जितने भी लोग मसीह की कलीसिया में है वे सब उसके राज्य में हैं। क्योंकि उसकी कलीसिया ही उसका राज्य है। वह अपने वचन

के द्वारा आज अपने अनुयायीयों के मनों में राज्य कर रहा है। वह अब राज्य करने नहीं आएगा, पर वह अभी राज्य कर रहा है। पर क्या आप उसके राज्य में हैं जिसे वह लेने के लिये एक दिन वापस आएगा? जो लोग यीशु मसीह में विश्वास करते हैं और अपना मन बुराई से फिराकर अपने पापों की क्षमा पाने के लिये मसीह की आज्ञानुसार बपतिस्मा लेते हैं, मसीह उनको अपने राज्य अर्थात अपनी कलीसिया में मिला लेता है। (प्रेरितों 2:38, 41, 47)। और अपने उसी आत्मिक राज्य को लेने के लिये मसीह एक दिन वापस आएगा।

हम परमेश्वर में विश्वास क्यों करते हैं?

जे. सी. चोट

संसार में दो प्रकार के लोग विद्यमान है। कुछ ऐसे हैं जो यह विश्वास नहीं करते कि परमेश्वर है तथा दूसरी ओर कुछ ऐसे लोग हैं जो विश्वास करते हैं कि परमेश्वर है। जो विश्वास नहीं करते, वे कहते हैं कि दुनिया अपने आप से बन गई थी यानि इसका कोई बनाने वाला नहीं है। यह लोग यह विश्वास भी नहीं करते कि उन्हें एक दिन किसी को अपने विषय में जवाब भी देना होगा। आज बहुत से लोग यह भी विश्वास करते हैं कि एक परमेश्वर के अतिरिक्त बहुत सारे परमेश्वर हैं। आपका इन बातों के विषय में क्या विचार हैं?

मैं एक मसीही हूं तथा मसीह की कलीसिया का सदस्य हूं। मैं तथा सभी मसीही लोग एक जीवित परमेश्वर मैं विश्वास करते हैं। वो परमेश्वर जिसने सारी सृष्टि को बनाया है शक्तिशाली है और वह सब कुछ जानता है। तथा हमारा यह भी विश्वास है कि वह अनन्त है। वह आत्मा है तथा सब जगह विद्यमान है। हम चाहते हैं कि आप भी उसमें विश्वास करें।

आप शायद कहें कि हम क्यों परमेश्वर में विश्वास करते हैं? आपको यह प्रश्न पूछने का पूरा अधिकार है कि हम परमेश्वर में क्यों विश्वास करते हैं? सबसे पहिले हम यह देखते हैं कि परमेश्वर में हम इसलिये भी विश्वास करते हैं क्योंकि तर्क अनुसार हम देखते हैं कि सारी सृष्टि की रचना कितनी सुन्दर है। केवल एक महान शक्ति ही ऐसा कर सकती है। जिस प्रकार से किसी पुस्तक का कोई लिखने वाला होता है, एक घर का कोई बनाने वाला होता है, कार का कोई बनाने वाला है उसी प्रकार से इस संसार का तथा इस पर रहने वाले लोगों का कोई बनाने वाला है। बाइबल बताती है कि, ''आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना की'' (उत्पत्ति 1:1)।

दूसरी बात यह है कि उसने मनुष्य को बनाया तथा मनुष्य बुद्धिमान है। सब कुछ जो उसने बनाया उसमें सबसे बढ़िया मनुष्य है। मनुष्य तर्क-वितर्क कर सकता है तथा

विचार कर सकता है। तथा समयानुसार मनुष्य का ज्ञान बहुत बढ़ गया हैं इसका अर्थ यह हुआ कि एक अति बुद्धिमान कर्ता ने उसे इस प्रकार से बनाया है। उत्पत्ति का पहिला अध्याय हमें बताता है कि परमेश्वर ने पृथ्वी और स्वर्ग की रचना किस प्रकार से की थी। (उत्पत्ति 1:28)।

तीसरी बात हम यह देखते हैं कि परमेश्वर ने मनुष्य को इस प्रकार से बनाया है कि उसके दो रूप है। एक बाहरी रूप तथा दूसरा अंदरूनी रूप अर्थात शारीरिक तथा आत्मिक। बाइबल बताती है कि मनुष्य को परमेश्वर ने अपने स्वरूप पर बनाया था। (उत्पत्ति 1:27)। फिर वचन में लिखा है कि ''और यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचाा और उसके नथनों में जीवन का स्वांस फूंक दिया और आदम जीवित प्राणी बन गया। (उपत्पत्ति 2:7)। और परमेश्वर आत्मा है। (यहून्ना 4:24)। जब हम कहते हैं कि मनुष्य परमेश्वर की समानता है तो इसका अर्थ है उसने उसके अंदर आत्मा डाली। सुलेमान ने कहा था ''तब मिट्टी ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी, और आत्मा, परमेश्वर के पास जिसने उसे दिया है लौट जाएगी।'' (सभोपदेशक 12:7)। आत्मा अमर है और यह भी परमेश्वर में विश्वास करने का एक प्रमाण है।

चौथी बात यह है कि परमेश्वर में विश्वास करने का कारण यह भी है कि प्रकृति में हम देखते हैं कि प्रत्येक वस्तु कितनी सुन्दर है और दिन कैसे निकलता है तथा मौसमों का बदलना और सारी पृथ्वी की सुन्दरता जो हम पेड़-पौधों के द्वारा देखते हैं।

चांद, सितारे तथा सूर्य सब अपनी दूरी बनाकर स्थित है। यदि सूर्य थोड़ा भी पृथ्वी के निकट होता तो सब जलकर खाक हो जाता। यदि सूर्य अधिक दूर होता तो पृथ्वी पर बहुत अधिक ठण्ड हो जाती। यह सब परमेश्वर का करिश्मा है। यह सब कितना अद्‌भुत है। दाऊद ने कहा था, ''आकाश ईश्वर की महिमा का वर्णन कर रहा है; और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है। दिन से दिन बातें करता है, और रात को रात ज्ञान सिखाती है। (भजन 19:1-2)।

पांचवें स्थान पर हम यह देखते हैं कि बाइबल जो परमेश्वर द्वारा प्रेरित वचन है, वह हमें बताती है कि एक महान परमेश्वर है। यह पुसतक हमें बताती है कि परमेश्वर है जिसमें सब कुछ बनाया है। (नीतिवचन 26:10)। वह अनन्त ईश्वर है। (यशायाह 9:6; सच्चा परमेश्वर जो जीवता है। (यीर्मयाह 10:10)। वह प्रेमी परमेश्वर हैं (1 यूहन्ना 4:1)। किसी का वह पक्षपात नहीं करता। (रोमियों 2:11) वह गड़बड़ी का परमेश्वर नहीं है। (1 कुरि. 14:33)। परमेश्वर के विषय में और भी बहुत सारी बातें बताई जा सकती है।

छटवीं बात जो इस विषय पर हम कह सकते हैं कि वह परमेश्वर ऐसा है जो अद्‌भुत और पराकर्मी है। उसके अतिरिक्त और कोई परमेश्वर नहीं है। प्रेरित पौलुस ने इफिसियों 4:4 में कहा था एक ही परमेश्वर है जो सबका पिता है। परमेश्वर जलन रखने वाला है और इसलिये वह नहीं चाहता कि हम किसी और के सामने झुकें निर्गमन 34:14 में कहा गया था कि तू किसी और ईश्वर की उपासना मत करना। फिर हम पढ़ते हैं कि, परमेश्वर ने अपने वचन में कहा है, ''तू मुझे छोड़ दूसरों को

ईश्वर करके न मानना, तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना न कोई प्रतिमा बनाना, जो आकाश में वा पृथ्वी पर वा पृथ्वी के जल में है, तू उनको दण्डवत न करना, और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला ईश्वर हूं।'' (निर्गमन 20:3-5)। यशायाह ने भी इसी बात के विषय में कहा था कि मूर्तिपूजा गलत है। (यशायाह 44:15,16)।

सातवीं बात यह है कि हम परमेश्वर में इसलिये भी विश्वास करते हैं क्योंकि उसने हम पर दया दिखाकर अपने पुत्र को इस संसार में भेजा ताकि वह क्रूस पर अपने प्राणों की आहुति देकर हमें उद्धार दे सके। (यूहन्ना 3:16)।

प्रेरित पौलुस कहता है, ''जब हम पापी ही थे तभी ठीक समय पर मसीह यीशु हमारे लिये मरा तथा वह यह भी कहता है कि विश्वास के द्वारा अनुग्रह से तुम्हारा उद्धार हुआ है। (रोमियों 5:8; इफिसियों 2:8, 9)।

अंत में हम यह देखते हैं कि परमेश्वर में विश्वास करने के बहुत से कारण है, किन्तु मूर्ख लोग परमेश्वर में विश्वास नहीं करते। जो लोग परमेश्वर को अस्वीकार करते हैं उन्हें यह जानना चाहिए कि एक दिन वे परमेश्वर का सामना करेंगे जैसे कि वचन में लिखा है। ''मेरे जीवन की सौंगध कि हर एक घुटना मेरे सामने टिकेगा, और हर एक जीभ परमेश्वर का अंगीकार करेगी। (रोमियों 14:11)। यदि आप परमेश्वर में विश्वास नहीं करते तो उसके विषय में गंभीरता से विचार कीजिये।

बच्चों के बपतिस्में के विषय में बाइबल क्या कहती है?

नैट किस्सी

जब हम पवित्र शास्त्र का अध्ययन करते हैं तो हम देखते हैं बाइबल में एक भी ऐसी आयत नहीं है जहां शिशुओं के बपतिस्मे के विषय का वर्णन किया गया हो।

जबकि, पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से प्रेरित होकर लिखा गया है तो हमें मनुष्य के द्वारा दिये गए सिद्धांतों की अपेक्षा परमेश्वर के द्वारा दिए गए सिद्धांतों को मानना चाहिये; तब ही मनुष्य सिद्ध होगा और सारे भले कामों को करने के लिये तत्पर रहेगा।

बपतिस्में की आवश्यकता ही क्या है?

हमें अपने पापों की क्षमा या उनको धोने के लिये यीशु मसीह के नाम का पानी में डुबकी का बपतिस्मा लेना चाहिए। (प्रेरितों 2:38)। बपतिस्मे के विषय में जो आज्ञाएं दी गई है उनका आज्ञापालन ही वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने आपको परमेश्वर के कार्य करने के लिये समर्पित करते हैं।

पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये एक शिशु ने कौन सा पाप किया है जिसके लिये उसको बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है?

कैसे एक शिशु जिसको अपने शरीर को काबू में रखने की थोड़ी या बिल्कुल

क्षमता नहीं है कैसे परमेश्वर के कार्य के लिये अपने आपको समर्पित कर सकता है? बच्चे बचपन से ही अपने सारे चाल-चलन में निर्दोष पाए जाते हैं।

"जिस दिन से तू सिरजा गया, और जिस दिन तक तुमसे कुटिलता न पाई गई, उस समय तक तू अपनी सारी चाल-चलन में निर्दोष रहा।" (यहेजकेल 28:15)।

"जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्था का विरोध करता है, और पाप तो व्यवस्था का विरोध है।" (1 यूहन्ना 3:4)।

"इसलिये जो कोई भलाई करना जानता है, और नहीं करता, उसके लिये यह पाप है।" (याकूब 4:17)

शिशु किसी व्यवस्था के आधीन नहीं है, वह किसी व्यवस्था को नहीं जानते जो उसका पालन करें, उन्हें भले बुरे का भी कोई ज्ञान नहीं होता और इस कारण जब वे जानते ही नहीं कि उन्हें अच्छे कार्य करने चाहिये; तो यदि वह ऐसा नहीं करते तो इसका यह अर्थ नहीं कि वह पाप करते है।

प्रभु यीशु मसीह ने यह शिक्षा दी कि जो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना चाहते हैं वे बच्चों के समान बनें।

"यीशु ने कहा कि जब तक तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो, तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे।" (मत्ती 18:3)

यीशु मसीह ने कहा, "परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है।" क्योंकि यदि किसी मनुष्य का हृदय परिवर्तन होता है, और वह पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेता है तब उसका आत्मिक तौर से नया जन्म होता है, और वह एक बालक के समान हो जाता है। (मत्ती 19:14; लूका 18:15-17; मरकुस 10:13:14)।

कुछ धार्मिक समूह ऐसी शिक्षा देते हैं कि शिशुओं को बपतिस्मा देने से उनका पुर्नजन्म हो जाता है, क्योंकि मनुष्य आदम के पाप के कारण पाप में जन्म लेता है; परन्तु परमेश्वर का प्रेरित वचन कहता है, "पुत्र के कारण पिता न मार डाला जाए, और न पिता के कारण, पुत्र मार डाला जाए, जिसने पाप किया हो वही उस पाप के कारण मार डाला जाए।" (व्यवस्था विवरण 24:16)।

"जो प्राणी पाप करे वही मरेगा, न तो पुत्र पिता के अधर्म का भार उठाएगा और न पिता, पुत्र का, धर्मी को अपने ही धर्म का फल और दुष्ट को अपनी दुष्टता का फल मिलेगा।" (यहेजकेल 18:20)।

इस कारण परमेश्वर के प्रेरित वचन के अनुसार आदम के पाप में न हमारा कोई भाग है न ही शिशुओं का। यद्यपि, आदम के पाप के कारण संसार में पाप आया और उसके फलस्वरूप मृत्यु आई, तो भी एक पिता के अच्छे और बुरे कार्यों की जवाबदेही सभी की है उसके पुत्रों की नहीं। किसी को हक नहीं है कि किसी दूसरे का लेखा परमेश्वर को कोई और दे, परन्तु किस हद तक, "इसलिये हममें से हर एक परमेश्वर को अपना अपना लेखा देगा।" (रोमियों 14:12)।

बपतिस्में से पहले किस चीज की आवश्यकता है?

इससे पहले कि पानी में डुबकी का बपतिस्मा लिया जाए, आवश्यक है कि :

बपतिस्मा लेने से पहले मसीह के सुसमाचार पर विश्वास किया जाए। और उसने उनसे कहा, "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार

करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस 16:15-16)।

बपतिस्मा लेने से पहले मन फिराएं , "मैं तुम से कहता हूं कि नहीं; परन्तु यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब भी इसी रीति से नष्ट होगे।" (लूका 13:3)।

"और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा।" (लूका 24:47)।

बपतिस्मा लेने से पहले यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करें, "कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करें, और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिये मुंह से अंगीकार किया जाता है।" (रोमियों 10:9-10)।

"तब फिलिप्पुस ने अपना मुंह खोला और इसी शास्त्र से आरंभ करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया। मार्ग में चलते चलते वे किसी जल की जगह पहुंचे। तब खोजे में कहा, "देख यहां जल है अब मुझे बपतिस्मा लेने से क्या रोक है?" फिलिप्पुस ने कहा, "यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है।" उसने उत्तर दिया, "मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।" तब उसने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी, और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उसने खोजा को बपतिस्मा दिया।" (प्रेरितों 8:35-38)। "जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के साामने मान लूंगा।" (मत्ती 10:32)।

शिशुओं को नहीं पढ़ाया जा सकता, वह विश्वास नहीं ला सकते या बपतिस्मे से पहले अपने पापों की क्षमा के लिये उनका अंगीकार नहीं कर सकते।

निष्कर्ष: शिशुओं का बपतिस्मा उद्धार नहीं दिला सकता, क्योंकि डुबकी का बपतिस्मा पापों की क्षमा के लिये है और शिशु पाप नहीं करते।

कोई भी मनुष्य जो वास्तव में यीशु मसीह में अपनी आत्मा के लिये उद्धार चाहता है शिशुओं के बपतिस्मे में विश्वास नहीं करेगा, जो कि परमेश्वर की नहीं मनुष्यों की शिक्षा है।

अनुवादक -भाई फैरल

क्या मसीही आराधना में वाद्ययंत्रों का प्रयोग होना चाहिए?

लुईस रशमोर

मसीह की कलीसिया

"और मैं भी तुझ से कहता हूं कि तू पतरस है, और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।" (मत्ती 16:18)।

"आपस में पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो। तुम को मसीह की सारी कलीसियासों की ओर से नमस्कार (रोमियों 16:16)

कलीसिया मसीह की है और जो अधिकार मसीह ने दिया है उसके अनुसार

सुचारु रूप से कार्य करने के लिये वचनबद्ध है।

"मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो, और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ और चिंताओं और अपने अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिये भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ। वचन से या काम में जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो।" (कुलुस्सियों 3:16-17)

जो लोग आज सुसमाचार के युग में रह रहे हैं उनको मसीह के वचनों को सावधानी से सुनना चाहिये, बाजाए मूसा के या पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के वचनों के।

परमेश्वर पिता ने यीशु मसीह के रूपानतर पर विशेष बल दिया जब उन्होंने कहा, "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूं, इसकी सुनो।" (मत्ती 17:1-5)

इस बात को याद रखें कि मूसा (पुराने नियम में व्यवस्था का देने वाला) और एलिय्याह - (सारे भविष्यद्वक्ताओं का प्रतिनिधित्वा करने वाला) रूपान्तर के समय वहां उपस्थित थे। इस कारण परमेश्वर पिता ने मुख्य रूप से कहा, "मेरे पुत्र यीशु मसीह की सुनो बजाय मूसा या भविष्यद्वक्ताओं की सुनने के।"

मसीह ने स्वयं संसार में अपनी सेवाकाल के दौरान अपनी महानता को सिद्ध करने की ओर ध्यान आकर्षित किया जब उन्होंने कहा, "जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उसको दोषी ठहराने वाला तो एक है : अर्थात जो वचन मैंने कहा है, वही, पिछले दिनों में उसे दोषी ठहराएगा।" (यूहन्ना 12:48)

आगे, मसीह यीशु व्यवस्था देने वाले हैं, "व्यवस्था देने वाला और हाकिम तो एक ही है, जो बचाने और नाश करने में सामर्थ है। पर तू कौन है जो अपने पड़ोसी पर दोष लगाता है।" (याकूब 4:12)

और नये नियम के मध्यस्थ हैं, "इसी कारण यह नई वाचा का मध्यस्थ है, ताकि उसकी मृत्यु के द्वारा जो पहली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिये हुई है, बुलाए हुए लोग प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त मीरास को प्राप्त करें। (इब्रानियों 9:15)

यह देखकर थोड़ा आश्चर्य होता है कि जब मसीह ने ईश्वरीय प्रकाशन में बदलाव की निंदा की (उस समय का यहूदी धर्म और इस समय का मसीही धर्म) कि लोग मनुष्यों की विधियों को सिखाते हैं।

"और यह व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।" (मत्ती 15:9)

और प्रेरित पौलुस ने भी झूठे सुसमाचारों को दोषी ठहराया, (गलतियों 1:6-9) और परमेश्वर की इच्छा मानने की बजाय मनुष्यों की इच्छा पर चलने वालों की निंदा की।

"इन विधियों में अपनी इच्छा के अनुसार गढ़ी हुई मत्ति, की रीति और आत्म हीनता और शारीरिक योगाभ्यास के भाव से ज्ञान का नाम तो है, परन्तु शारीरिक लालसाओं को रोकने में इनसे कुछ भी लाभ नहीं होता।" (कुलुस्सियों 2:23)

हम केवल और केवल नये नियम की शिक्षा की ओर ध्यान दें यह जानने के लिये कि परमेश्वर ने मसीही उपासना में बजाने वाले यंत्रों के विषय में क्या अधिकार दिया है।

यह देखने के लिये परमेश्वर ने उपासना में बजाने वाले यंत्रों के विषय में क्या अधिकार दिया है पुरानी वाचा और स्वर्ग सही स्थान नहीं है

जो लोग आधुनिक युग में रह रहे हैं उनके लिये पुरानी वाचा को नई वाचा से बदल दिया गया है।

उसको "समाप्त कर दिया" (2 कुरिन्थियों 3:6-11) "मिटा दिया"।

"ओर अपने शरीर में बैर अर्थात वह व्यवस्था जिसकी आज्ञाएं विधियों की रीति पर थी, मिटा दिया कि दोनों से अपने में, एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे।" (इफिसियों 2:15)

और कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया, "और विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर और हमारे विरोध में था मिटा डाला, और उसे क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया है।" (कुलुस्सियों 2:14)

जो लोग आज के युग में रह रहे हैं उनको सारी पुरानी वाचा से "छुटकारा" मिल चुका है, जिसमें दस आज्ञाएं भी सम्मिलित हैं। "परन्तु जिसके बंधन में हम थे उसके लिये मरकर, अब व्यवस्था से ऐसे छूट गए, कि लेख की पुरानी रीति पर नहीं, वरन आत्मा की नई रीति पर सेवा करते है। तो हम क्या कहे? क्या व्यवस्था पाप है? कदापि नहीं वरन बिना व्यवस्था के मैं पाप को नहीं पहचानता, व्यवस्था यदि कहती कि लालच मत कर, तो मैं लालच को नहीं जानता।" (रोमियों 7:6-7)

निश्चित रूप से नई वाचा एक उत्तम प्रभावशाली वाचा है, "पर उन याजकों से बढ़कर सेवा यीशु को मिली क्योंकि वह और भी उत्तम वाचा का मध्यस्थ ठहरा जो और उत्तम प्रतिज्ञाओं के सहारे बांधी गई है। क्योंकि यदि वह पहली वाचा निर्दोष होती तो, दूसरी के लिये अवसर न ढूंढा जाता।" (इब्रानियों 8:6-7)

इस कारण, परमेश्वर ने जो उपासना से संबंधित अधिकार दिये है (वाद्य यंत्रों समेत) उनको पुरानी वाचा में देखना सही नहीं है।

स्वर्ग में कुछ हो या न हो उसका आज के मसीही युग से कोई संबंध नहीं है और अनेक बार उपासना के संबंध में जो अधिकार परमेश्वर ने दिये भी नहीं उनको साबित करने के लिये स्वर्ग संबंधी संदेशों को तोड़-मरोड़ कर पेश करने का एक व्यर्थ प्रयास किया जाता है।

न्याय के दिन हर एक प्राणी सिंहासन के सामने खड़ा होगा और हर एक के कामों के अनुसार उसका न्याय किया जाएगा।

"फिर मैंने छोटे बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा और पुस्तकें खोली गई, और फिर एक पुस्तक खोली गई, अर्थात जीवन की पुस्तक; और जैसा उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, वैसे ही उनके कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया। और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा न मिला, वह आग की झील में डाला गया।" (प्रकाशितवाक्य 20:12)।

इस कारण स्वर्ग के जिन वाद्य यंत्रों का वर्णन किया गया है उनका उस अधिकार से जिनको आज परमेश्वर की उपासना के लिये दिया गया है, कोई महत्त्व नहीं है।

पहली बात, प्रकाशित वाक्य 14:2 के अनुसार, "और स्वर्ग से मुझे एक ऐसा शब्द सुनाई दिया जो जल की बहुत धाराओं और बड़े गर्जन का सा शब्द था, और जो शब्द मैंने सुना वह ऐसा था मानो वीणा बजाने वाले वीणा बजा रहे हो।" यहां बजाए यंत्र के "शब्द" का वर्णन किया गया है।

दूसरी बात, प्रकाशित वाक्य की पुस्तक के भाग अधिक तौर से आलंकारिक है – अर्थात् ऐसे शब्दों का कल्पनाशील प्रयोग किया गया। है जो अपने मूल अर्थ से भिन्न है जो किसी का प्रत्यक्ष कारण न हो, घुमाव – फिराव वाला और अधिकांश तौर पर चिन्हों का प्रयोग है, अत: स्वर्ग में वीणा का उल्लेख असल में वीणा वाद्य से नहीं है।

"जब उसने पुस्तक ले ली तो वे चारों प्राणी और चौबिस प्राचीन उस मेन्ने के सामने गिर पड़े। उनमें से हर एक के हाथ में वीणा और धूप, जो पवित्र लोगों की प्रार्थना हैं, से मरे हुए सोने के कटोरे थे।" (प्रकाशित वाक्य 5–8)

"तब मैंने आग मिले हुए कांच का सा एक समुद्र देखा, और जो उस पशु पर और उसकी और उसकी सूरत पर और उसके नाम के अंक पर जयवंत हुए थे, उन्हें उस कांच के समुद्र के निकट परमेश्वर की वीणाओं को लिये हुए खड़ा देखा।" (प्रकाशित वाक्य 15:2)

अनन्त काल में क्या घटित हो रहा है यह नहीं हो रहा यह बेमतलब है और उसका आज भी मसीही उपासना से कोई लेना देना नहीं है।

आज की उपासना में परमेश्वर ने एक ही प्रकार का संगीत केवल कंठस्वर का उपयोग यानी गाने गाए जाने का ही अधिकार दिया है

यदि पहले का इतिहास देखें तो यूबाल नाम के व्यक्ति ने "वीणा और बांसुरी" का आविष्कार किया था, "और उसके भाई का नाम यबाल था: वह वीणा और बांसुरी आदि बाजों के बजाने की सारी रीति का प्रवर्तक हुआ।" (उत्पत्ति 4:21)

दाऊद बादशाह ने पहली दफ़ा संगीत के बाद्य यंत्रों को यहूदी उपासना में पेश किया। "और चार हजार द्वारपाल नियुक्त हुए, और चार हजार वाद्ययंत्रों से यहावा की स्तुति करने के लिये ठहराए गए जो दाऊद ने स्तुति करने के लिये बनाए थे।" (1 इतिहास 23:5) "तुम सारंगी के साथ गीत गाते, और दाऊद के समान भांति–भांति के बाजे बुद्धि से निकालते हो।" (आमोस 6:5)

नये नियम में प्रभु की कलीसिया में उपासना में, संगीत से संबंधित जो भी आता है वह केवल बगैर वाद्ययंत्रों के गाने के विषय में हैं, "फिर वे भजन गाकर जौतून पहाड़ पर गए।" (मत्ती 26:30; मरकुस 14:26)

आधी रात के लगभग पौलुस और सीलास प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के भजन गा रहे थे, और कैदी उनकी सुन रहे थे।" (प्रेरितों 16:25)।

"और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो (इफिसियों 5:19)।

"यदि तुम में कोई दु:खी हो, तो वह प्रार्थना करे। यदि आनन्दित हो, तो वह स्तुति के भजन गाए।" (याकूब 5:13)।

पहली शताब्दी की कलीसिया की मण्डली की आराधना का एक नमूना थी कि गाने किस प्रकार के हो उसकी पहचान इस बात से होती है कि उसको प्रेरितों की ओर से अधिकारिक अनुमति मिली हुई थी, "अत: क्या करना चाहिए? मैं आत्मा से भी प्रार्थना करूंगा, और बुद्धि से भी प्रार्थना करूंगा, मैं आत्मा से गाऊंगा, और बुद्धि से भी गाऊंगा।" (1 कुरिन्थियों 14:15)

पहली शताब्दी की कलीसिया में प्रभु के सामने "भजन, स्तुतिगान और आत्मिक गीत" गाए जाते थे और वाद्ययंत्र हृदय होता था जो धुन तैयार करता था, "और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो।" (इफिसियों 5:19)

प्रभु की स्तुति हो, इन शब्दों के साथ-साथ इन स्तुति गानों को अभिप्राय आत्मिक सत्यता की शिक्षा को देना भी था, "मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ और चिंताओं और अपने अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिये भजन, और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओं" (कुलस्सियों 3:16)

वाद्ययंत्रों और (हाथों से ताली बजाना) इस कार्य को करने में असमर्थ थे। इस बात का ध्यान दिये बिना कि कौन सा स्थान है या क्या अवसर है, पहली शताब्दी की कलीसिया में संगीत "भजनों" के गाने ही से जुड़ा रहता था, "यदि तुम में कोई दुखी हो, तो वह प्रार्थना करे। यदि आनन्दित हो तो वह स्तुति के भजन गाए।" (याकूब 5:13)

वह कहता है, "मैं तेरा नाम अपने भाईयों को सुनाऊंगा; सभा के बीच में मैं तेरा भजन गाऊंगा।" (इब्रानियों 2:12)।

पहली शताब्दी की कलीसिया आराधना में वाद्ययंत्रों का प्रयोग नहीं करती थी क्योंकि बाइबल में इसके विषय में कोई अधिकार या अनुमति नहीं दी गई थी। प्रभु की कलीसिया की स्थापना के बाद सैंकड़ों वर्षों तक किसी भी कलीसिया ने आराधना में वाद्ययंत्रों का उपयोग नहीं किया।

आरंभ से अंत तक इतिहास गवाह है कि प्रख्यात धार्मिक नेतृत्व करने वाले व्यक्तियों ने भी यह महसूस किया कि आराधना में वाद्ययंत्रों के प्रयोग के विषय में नये नियम में कोई अधिकार नहीं दिया है।

एक समय था जब न तो कैथोलिक कलीसिया और न ही सम्प्रादायिक कलीसियाएं आराधना में वाद्ययंत्रों का प्रयोग करती थी।

"लूथर ने पियानो वाद्य यंत्र को बाल देवता बताया था। कैलविन ने कहा कि मसीही कलीसिया में वाद्य यंत्रों का उपयोग करना सही नहीं था यह अगरबत्ती और मोमबत्ती जलाने जैसा था।

नौक्स ने पियानो के विषय में कहा कि यह केवल नालियों वाला एक वाद्य यंत्र लकड़ी की एक बड़ी पेटी के समान है।

इंग्लैंड की कलीसिया ने बड़े विरोध के बीच में इसको पुर्नजीवित किया और दोबारा उत्पन्न किया और अंग्रेजी अधिकारियों ने सामान्य धारणाओं से असहमति

प्रकट की और इसे छूने से भी मना कर दिया।"।

आज तक किसी को भी यह अधिकार नहीं दिया गया कि मसीही आराधना में, वाद्य यंत्रों को शामिल करें। हर कोई जो बाइबल के अधिकार का सम्मान करता है और परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहता है वह परमेश्वर की आराधना उसी संगीत से करेगा जिसका परमेश्वर ने अधिकार दिया है – अर्थात् केवल गाना गाकर वाद्य यंत्रों का प्रयोग न करके वाद्य यंत्रों का प्रयोग न करके। वाद्ययंत्रों का आराधना में प्रयोग न करने के निर्णय को हमने अपने विश्वास से स्वीकार किया है न कि अपनी इच्छा से ऐसा करते हैं।

मसीह की कलीसियाएं मसीह यीशु के द्वारा दिये गए अधिकार आज्ञा को पूरा करने के लिये पूर्णतः वचनबद्ध है, और यीशु ने मसीही आराधना में वाद्य यंत्रों के प्रयोग की स्वीकृति नहीं दी है।

अनुवादक – भाई फैरल

हमारा अद्‌भुत अस्तित्व

बैटी बर्टन चोट

परिचयः हम अनेकों आश्चर्यपूर्ण और अद्‌भूत वस्तुओं से घिरे हुए हैं – लेकिन हम उनकी तरफ कोई ध्यान नहीं देते क्योंकि हम उन्हें हमेशा देखते आए हैं। अगर हमने कभी भी एक पेड़ न देखा होता, किन्तु एकाएक वह हमारे सामने आ जाता (ध्यान दें एक पेड़ की तरफ, कितना ऊंचा है वह; क्या आपने कभी एक ऐसे पम्प के बारे में सुना है जो जमीन से पानी और आहार को खींचकर उन्हें सबसे ऊपर की शाख या डाली तक पहुंचा दे?) या मान लें, हमने कभी भी कोई छोटा बच्चा न देखा होता, पर एकाएक बिस्तर पर पड़ा हुआ, हाथ–पैर मारते, किलकारिएं मारते, हमारी तरफ आने की कोशिश करते, एक नन्हा बच्चा हम देख लें, तो हमारी आंखें आश्चर्य से फटी रह जाएंगी।

इन पाठों में हम अपनी ताजा आंखों से कुछ खास बातों पर ध्यान देंगे। मनुष्य के बारे में अनेक गलत धाराओं को अपने दिमागों से निकालकर, और विशेषकर स्त्रियों के बारे में, हम देखना चाहेंगे कि, "मैं कौन हूं?" अपनी अमीरी या गरीबी को अलग करके, अपने पारिवारिक संबंधों से अलग हटकर मैं अपने बारे में ऐसे देखूं कि मैं "एक व्यक्ति" हूं। मैं मानवता के सागर में विद्यमान हूं– जहां पांच सौ करोड़ से भी अधिक लोग हैं– तौ भी मुझे जिंदगी और उसके तजुरबों का स्वयं अपने ही "व्यक्तित्व" से सामना करना पड़ता है। अपने मा–बाप, या पति या बच्चों के चाहे मैं कितनी भी करीब हूं, तौ भी हम अलग व्यक्ति हैं। हम अन्य लोगों की भावनाओं, प्यार, दर्द, और खुशी को महसूस भी नहीं कर सकते। यानि, अन्य लोग मेरे प्यारके फल को या उसमें क्या है, यह तो देख सकते हैं, पर अपने भीतर स्वयं उसे महसूस नहीं कर सकते। लेकिन मैं क्या हूं?

यह आश्चर्यजनक मशीन क्या है?

मैं क्या हूं? (1) खाल जो लगभग दो स्कवैर मीटर बिना जोड़ लगे कपड़े की तरह है, और वजन में लगभग चार किलो है। सारे के सारे सेल (कोशिकाएं) एक ही तत्व से रचे गए हैं, तौ भी वे अपने अपने काम और आवश्यकता के अनुसार भिन्न-भिन्न रूप और बारीकियों में दिखाई पड़ते हैं (होंठ, खोपड़ी, उंगलियां, नाखून, बाल)।

(क) खाल हमारे शरीर को नुक्सानदेह बैक्टेरिया से बचाती है, और आवश्यकतानुसार हमारे शरीर में नमी और तापमान को बनाए रखती है। खाल को देखकर हम एक दूसरे को पहचानते हैं।

(ख) खाल के द्वारा ही शरीर के स्वास्थ्य की भी पहचान होती है। कैसे? ये बाहरी कोशिकाएं किस प्रकार जान लेती है कि शरीर के भीतर क्या घट रहा है? उनका दिमाग तो है नहीं - सो फिर, कैसे?

(ग) खाल यानि त्वचा भावनाओं को व्यक्त करती हैं (पर, कैसे? याद रहें, कि उसके पास अपना दिमाग तो है नहीं); वह शरमाती है, पीली पड़ जाती है, उससे पसीना निकलता है, और उसमें सनसनाहट होती है; यानि जो कुछ दिमाग में गुजर रहा होता है उसी के जवाब में।

(घ) अपने चेहरे की त्वचा के द्वारा हम अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं; छू लेने भर से हमारी भावनाएं दिखने लगती हैं (प्यार, गुस्सा, आरंभ), किसी चीज को छूकर हम उसे पहचान लेते हैं। कैसे? दिमाग न होते हुए भी खाल किसी वस्तु को छूकर कैसे पहचान लेती है?

मैं क्या हूं (2) खाल के भीतर: यह मानव मशीन, जिसका आरंभ स्त्री के अण्डे और पुरुष के शुक्राणु के मिलने से एक सेल (कोशिका) के द्वारा होता है, लगभग 100 ट्रिलियन, यानि सैंकड़ों करोड़ कोशिकाओं से मिलकर बना हुआ है। उसी एक कोशिका के भीतर शरीर की अन्य सभी कोशिकाओं के लिये डी.एन.ए का एक नमूना बन गया था।

(क) डी.एन.ए. इतना छोटा और ठोस है कि मेरे शरीर की कोशिकाओं में जितनी भी जीन्स हैं वे सब की सब दो इंच की एक क्यूब में फिट हो सकती है। फिर भी अगर डी.एन.ए. को खोलकर उसे एक सिरे से दूसरे सिरे तक ले जाया जाए तो वह इतना लम्बा है कि उसे चार सौ बार से भी ज्यादा जमीन से सूरज तक और सूरज से जमीन तक ले जाया जा सकता है।

(ख) देह की 100 ट्रिलियन कोशिकाओं की प्रत्येक कोशिका में उसके विशेष गुण ओर कार्य पाए जाते हैं। अगर कोशिकाओं में पाई जाने वाली डी.एन.ए. की सभी हिदायतों को लिखा जाए, तो 600 पृष्ठों की लगभग एक हजार किताबें बन जाएंगी। हर एक कोशिका के भीतर, केवल उन्हीं हिदायतों को खोलकर कार्यशील बनाया जाता है जो उस कोशिका की आवश्यकतानुसार हो। (गुर्दे कि एक कोशिका को यदि हिदायत मिले कि वह वोलयूम 487 और पेज 32 और पैरा 3 को निकाले तो इसके अलावा वह सेल और कुछ नहीं बताएगा) बाकी की सारी हिदायतें उसमें वैसे की वैसे बंद रहेंगी। कोशिकाओं का अपना कोई दिमाग नहीं है। उन्हें कैसे जानकारी मिलती है कि कब किसे कार्यशील बनाना है?

मैं क्या हूं (3) हड्डियां: डी.एन.ए. का निर्देश लेकर कुछ कोशिकाएं (सेल) कैलशियम में बदल जाती है, और शरीर के अंगों को जोड़ने का काम करती हैं - बचपन की अवस्था से निकलकर जब हम बड़े हो जाते हैं तो हमारे शरीर में 206 "हड्डियां" पाई जाती है। मनुष्य का मजबूत शरीर जिस तरह से हड्डियों से गठकर बना हुआ है, उसे कोई भी इंसानी चीज ऐसा नहीं बना सकती। उस पर दबाव डाला जा सकता है, और उसे फैलाया जा सकता है. वह हल्का है, और मजबूत भी; हड्डियों के भीतर खून का एक कारखाना काम कर रहा है, जो हर एक दिन करोड़ों की संख्या में खून की नई कोशिकाओं को बनाता है। सो हड्डियां एक फैक्टरी के समान हैं और उस खून की रक्षा भी करती है, जो शरीर का जीवन है। हड्डियां शरीर को आकार और ताकत देती है, तौ भी शरीर में उनका वजन 1/5 है।

मैं क्या हूं (4) मांसपेशिया: हमारे शरीर में 600 मांसपेशियां हैं, शरीर के वजन का 40 प्रतिशत, कुछ ऐसी हैं जो मनुष्य की इच्छा से काम करती है - जिन मांसपेशियों से हम काम करते हैं। कुछ ऐसे बड़े ही खास काम करती है जिनहें मनुष्य की इच्छा पर नहीं छोड़ा जा सकता। जितनी भी मांसपेशियां शरीर के सही ढंग से काम करने के लिये आवश्यक हैं (दिल, फेफड़े, इत्यादि) वे स्वयं अपना-अपना काम करती रहती हैं।

मैं क्या हूं (5) खून: मौत नहीं, पर जीवन है। कल्पना करें एक ऐसी विशाल नदी की जो पूरी दुनिया में बह रही है, जिससे हर एक इंसान की आवश्यकता पूरी हो सके। फिर एक कल्पना करें कि उसमें बड़े-बड़े पोत (किश्तयां) हैं, जिनमें सब प्रकार के खाने की चीजें और सामान लदा हुआ है, जो 100 ट्रिलियन यानी करोड़ों लोगों के लिये आवश्यक है। वे सब के सब अपनी-अपनी आवश्यकतानुसार उनमें से लेते रहते हैं, और उनमें वे चीजें अपने आप भरती रहती हैं, ताकि कभी किसी चीज की कोई कमी न हो। और सारा मैला (कूड़ा) उन्हीं किश्तियों पर रखकर हटा दिया जाए। मनुष्य के शरीर में खून नावों की एक ऐसी ही नदी के समान है, जिससे शरीर को ऑक्सीजन, अमीनो ऐसिड, शूगर, कैलिसियम, इत्यादि मिलते रहते हैं। सूई की नोक के बराबर खून के एक बिन्दु में पच्चास लाख लाल कोशिकाएं; तीन लाख खून के किनके, और 7000 सफेद कोशिकाएं पाए जाते हैं।

(क) लाल कोशिकाएं: 60,000 मील की रक्तवाहिनी नलियों को ये सेल आहार और ऑक्सीजन देते हैं, और शरीर में की गंदगी को दूर करके शरीर को शुद्ध रखते हैं। यदि खून का बहाव रोक दिया जाए- तो उसका नतीजा होगा दर्द और शरीर में जहरीली गैस का फैलाना।

(ख) सफेद कोशिकाएं: शत्रुओं से रक्षा करती हैं। एक स्वस्थ शरीर में इनकी मात्रा करीब 25 सौ करोड़ होती है, पर बीमारी के समय ये शरीर में दस गुना और अधिक हो सकती है। कुछ सफेद कोशिकाओं की आयु केवल दस घंटे की होती है, पर कुछ 60 या 70 साल तक रहते हैं, और उनमें शत्रुओं से लड़ने की क्षमता होती है। गलती से कभी-कभी हम ऐसा सोच लेते हैं, कि दवाईयां लेने से हम अच्छे हो जाते हैं। पर ऐसा नहीं है। दवाईयां सफेद कोशिकाओं की सहायता करती हैं ताकि वे

बीमारी के कारण को नाश कर सकें। एड्स के रोग से इसकी पुष्टि होती है।

(ग) खून के नन्हें किनके: रक्वाहिनियों में रिसाव का पता लगाकर वहां जाले बना देते हैं, जिन पर तुरंत लाल सेल धावा बोल देते हैं, और इस प्रकार रिसाव बंद हो जाता है।

मैं क्या हूं? (6) दिमाग, नाड़ी मण्डल: एक बड़ी ही नाजुक गठड़ी है, सलेटी रंग की जेली की तरह, जिसका बचाव खोपड़ी करती है। दिमाग का वजन डेढ़ किलो से भी कम होता है। यह खून की कोशिकाओं से ओर कुछ खास किस्म की नाड़ी कोशिकाओं से भरा होता है।

(क) दिमाग में स्वयं अपना कोई अहसास नहीं होता; उसे "अनुभव" होता है या वह "देखता" है, जब उसे शरीर की विभिन्न नाड़ियों से कुछ निर्देश मिलते हैं।

(ख) दिमाग में बड़ी ही अद्भुत योग्यताएं हैं। उसमें कल्पना है, विवेक है, मजाक और चुनाव करने की शक्ति है, आत्मिकताएं हैं, सोचने की शक्ति और तर्क या विचार करके हल निकालने की शक्ति है। दिमाग में इतनी अधिक ताकत और योग्यताएं हैं कि उनका बयान नहीं किया जा सकता। पृथ्वी पर कोई भी ऐसी अद्भुत वस्तु नहीं है जिसकी तुलना मनुष्य के दिमाग से हो सके।

निष्कर्ष: मैं एक ज़िंदा प्राणी हूं। मेरा सम्बंध परमेश्वर से और मनुष्यों से है। मेरे भीतर अपने आप को सही ढंग से जानने और समझने की जिज्ञासा है। परमेश्वर के सम्मुख अपने महत्व को देखकर, और इस बात को समझकर कि अन्य लोगों के लिये क्या-क्या करने की क्षमता मेरे भीतर है, मुझे अपने भीतर शांति, प्रसन्नता, और संतुष्टि का अनुभव होता है।

परमेश्वर कहता है, कि उसके सामने, "न कोई यहूदी है और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतंत्र; न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।" (गलतियों 3:28)। मेरा एक दोहरा व्यक्तित्व है। शारीरिक देह का जन्म मरने के लिये - और फिर एक नई जिंदगी में बदल जाने के लिये होता है। आत्मा का जन्म सदा बने रहने के लिये होता है। शरीर नाशमान है और आत्मा अमर है।

पाप की समस्या के समाधान

कॉय रोपर

मसीही लोगों को पाप तो नहीं करना चाहिए पर वे करते हैं

यूहन्ना कहता है, "मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूं कि तुम पाप न करो और यदि कोई पाप करे.....।" यह एक वास्तविक संभावना थी कि मसीही व्यक्ति पाप करे। यूहन्ना इस संदर्भ में इससे भी कठिन भाषा का इस्तेमाल करता है, "यदि हम कहें कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आपको धोखा देते हैं, और हम में से सत्य नहीं। ...यदि हम कहें कि हम ने पाप नहीं किया, तो उसे झूठा ठहराते हैं, और उसका वचन हम में नहीं।" (1 यूहन्ना 1:8-10)। स्पष्टतया मसीही लोग पाप करते हैं। मसीही और गैर मसीही लोगों में अंतर यह नहीं है कि गैर मसीही लोग पापी हैं और

मसीही लोग नहीं। बल्कि अन्तर यह है कि मसीही लोग वे पापी हैं जिनका उद्धार अनुग्रह से हुआ है, और गैर मसीही लोग पापी ही हैं।

केवल यह जान लेना कि मसीही लोग पाप कर सकते हैं और इसके बावजूद मसीही बने रह सकते हैं चेलों के लिए सहायक होगा। यदि उन्हें पहले से चेतावनी दी जाए कि मसीही लोग भी पाप कर सकते हैं तो पाप द्वारा उनके ऊपर विजय पाने से निराश नहीं होंगे। मसीही के रूप में, क्या आप पाप करते हैं? अन्य हर मसीही भी करता है। केवल इसलिए कि आपने पाप किया है पीछे न हटें। पाप करना हमें अनिवार्य रूप में दोषी नहीं बनाता पर पीछे हट जाना बनाता है।

परन्तु यह पता चलने पर कि हम पाप करते हैं एक समस्या खड़ी कर देता है। क्या यह कहने में कुछ विरोधाभास नहीं है कि हमें पाप नहीं करना चाहिए, पर हम करते हैं? यदि हमें पाप नहीं करना चाहिए और हम तब भी करते हैं तो हम कितना पाप करके "भाग" सकते हैं कि फिर भी अनन्तकाल के लिए उद्धार पाएं? यूहन्ना दो अन्य बल्कि कठिन वचनों में पहले यूहन्ना की पुस्तक में इस समस्या का समाधान करने में सहायक करता है :

जो कोई उसमें बना रहता है, वह पाप नहीं करता: जो कोई पाप करता है, उसने न तो उसे देखा है, और न उसको जाना है। हे बालको, ...जो कोई पाप करता है, वह शैतान की ओर से है, क्योंकि शैतान आरंभ ही से पाप करता आया है। ...जो कोई परमेश्वर से जन्मा है वह पाप नहीं करता; क्योंकि उसका बीज उसमें बना रहता है, और वह पाप कर ही नहीं सकता, क्योंकि वह परमेश्वर से जनमा है (1 यूहन्ना 3:6-9)।

हम जानते हैं कि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है वह पाप नहीं करता (1 यूहन्ना 5:18)।

क्या यूहन्ना के कहने का अर्थ यह है कि मसीही व्यक्ति के लिए पाप करना असंभव है? स्पष्टतया नहीं? फिर तो वह 1 यूहन्ना 1:8, 10; 2:1 में कही अपनी ही बात का विरोध करता। तो फिर इसका क्या अर्थ है?

इस प्रश्न का उत्तर मूल भाषा में क्रियाओं के काल में मिलता है। यूनानी में ये क्रियाएं वर्तमान काल में हैं जिसमें निरंतर क्रिया करने का विचार पाया जाता है। उनका अनुवाद "...करता रहता" हो सकता है। मूल में यूहन्ना यह कहता है:

कोई भी जो उसमें बना रहता है पाप करना जारी नहीं रखता...।

वह जो पाप करना जारी रखता है, शैतान से है...।

जो परमेश्वर से जन्मा है वह पाप करना जारी नहीं रखता...।

वह पाप करना जारी नहीं रख सकता क्योंकि परमेश्वर से जन्मा है....।

परमेश्वर से जन्मा कोई व्यक्ति पाप करना जारी नहीं रखता...।

सो यूहन्ना बता रहा है कि मसीही लोग पाप करते हैं, यह सही है परन्तु वे पाप करते नहीं रहते। वे पाप करने के आदी नहीं है। पाप उनके जीवन की मुख्य बात या उन्हें चलाने वाला नियम या मुख्य प्रवृत्ति नहीं है। वह मसीही व्यक्ति का चित्र ऐसे व्यक्ति के रूप में बनाता है जो पाप न करने कोशिश करता है, परन्तु जो कभी-कभी पाप के भ्रम में फंस जाता है। आमतौर पर, आदत के अनुसार वह परमेश्वर के मार्ग में चलता है, परन्तु कभी-कभी ठोकर खाकर गिर जाता है। उसके

जीवन का लक्ष्य और उद्देश्य धार्मिकता है। पर कभी - कभी वह पाप के आगे घुटने टेक देता है।

इसे समझाने के लिए जीत रहे धावक या टीम पर विचार करें कि वह क्या करता है, बड़ा गोल्फ खिलाड़ी है पर शॉट सीधा नहीं मारता, हर गढ्ढे के आस-पास (गढ्ढे से काफी कम) मारता है या हर टूर्नामेंट जीतता है। परन्तु वह अधिकतर टूर्नामेंट से बेहतर करता है और अधिकतर जीतता है। बेसबॉल में सबसे अच्छा हिटर पर बैट पर हिट नहीं मारता। वास्तव में प्लेट तक जाने में वह रह बार हिट भी नहीं मारता। कई बार तो वह आउट हो जाता है। परन्तु वह इतनी हिटें लेता है कि उसके प्लेट तक आने पर आपको उम्मीद होती है कि कुछ होगा...। बड़ी से बड़ी फुटबॉल पर हर बार गोल नहीं करती। या हर बार पहले उनके पास बॉल नहीं होती परन्तु यह गेम जीतने में पूरी कोशिश करती है।

मसीही व्यक्ति के साथ भी ऐसा ही है। वह हर पाप पर जय नहीं पा लेता परन्तु हारने से अधिक जीतता है। कभी-कभी परीक्षा के साथ युद्ध हार जाने के बावजूद वह इसे अपनी आदत नहीं बनाता। उसके जीवन की प्रवृत्ति या दिशा पाप करना नहीं बल्कि धार्मिकता है। वह कभी-कभी आऊट हो सकता है पर अधिकतर "गोल करता" ही है।

मसीही व्यक्ति को यह समझने की आवश्यकता है कि उसे पाप नहीं करना चाहिए, पर वह करेगा। जब वह पाप करता है तो निराश होने का कोई कारण नहीं है, बल्कि उठ कर धार्मिक जीवन जीने की कोशिश फिर से करने का कारण है।

जब मसीही लोग पाप करते हैं, तो परमेश्वर उपचार देता है

यूहन्ना कहता है, "...यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है; अर्थात् धर्मी यीशु मसीह; और वही हमारे पापों का प्रायश्चित है, और केवल हमारे ही नहीं वरन सारे जगत के पापों का भी" (1 यूहन्ना 2:1, 2)।

यूहन्ना कहता है कि हमें पाप नहीं करना चाहिए, पर हम फिर भी करते हैं। यह बुरी खबर है। फिर अच्छी ख़बर आती है कि परमेश्वर ने हमारे लिए उपाय किया है कि जब हम पाप करते हैं तो वह हमें क्षमा करे। यह संदेश हमें बताता है कि चाहे मैं पापी हूं, फिर भी मुझे क्षमा किया जा सकता है और मैं फिर भी स्वर्ग में जा सकता हूं।

यह क्षमा किस प्रकार से पाई जाती है? परमेश्वर का उपाय केवल यीशु मसीह है। वह हमारा सहायक है जो पिता के पास हमारी सफाई देता है। वह हमारे पापों का प्रायश्चित अर्थात "वह माध्यम है जहाँ पाप को ढांपकर क्षमा किया जाता है।" उसके लहू के द्वारा हमारे पाप क्षमा किए जाते हैं (1 यूहन्ना 1:7)।

तो फिर किस आधार पर हमें क्षमा और अनन्त उद्धार की आशा है? अपने भीतर पाई जाने वाली भलाई के आधार पर? अपने भले कामों के आधार पर? मसीही जीवन पूर्ण ढंग से जीने के आधार पर? नहीं। बल्कि परमेश्वर के अनुग्रह और मसीह के लहू के आधार पर हमें क्षमा इसलिए नहीं किया जाता कि हम ने परमेश्वर के लिए कुछ किया है बल्कि इसलिए किया जाता है कि परमेश्वर ने हमारे लिए कुछ किया है।

अपने पापों के लिए परमेश्वर के उपचार को पाने के लिए मसीही लोगों के लिए कुछ करना आवश्यक है।

यूहन्ना यह भी बताता है कि मसीही लोगों को मसीह के द्वारा मिलने वाली परमेश्वर की क्षमा सशर्त है। उस क्षमा को पाने के लिए मसीही लोगों को कुछ करना आवश्यक है। हमें इस पर चकित नहीं होना चाहिए। पहले तो हमारा उद्धार अनुग्रह से होता है, परन्तु केवल तभी जब हम क्षमा की शर्तों को पूरा करके उस अनुग्रह को ग्रहण करते हैं यानी जब हम विश्वास करके, अंगीकार करते, मन फिराते और बपतिस्मा लेते हैं। इसलिए यह बेतुका नहीं है कि हमें मसीह के द्वारा अनुग्रह के उद्धार पाते रहने के लिए कुछ करना चाहिए।

परन्तु क्षमा पाने के लिए परमेश्वर मसीह लोगों से क्या चाहता है? उद्धार पाए हुए रहने के लिए हम क्या करें? इस शीर्षक में इस्तेमाल के लिए मैंने दो तीन बातों पर विचार करने की कोशिश की, परन्तु अन्त में निष्कर्ष निकला कि परमेश्वर हम से तीन या चार नहीं बल्कि केवल एक ही बात चाहता है। 1 यूहन्ना 1:7 में यूहन्ना हमें बताता है कि वह एक बात क्या है। मसीही व्यक्ति के लिए अपने पापों से शुद्ध होने के लिए आवश्यक एक बात "ज्योति में चलना" है।

पर कोई आपत्ति करता है ,"मन फिराव का क्या हुआ, क्या उसकी आवश्यकता नहीं?" हां, है। मसीही व्यक्ति के लिए अपने पापों से मन फिराना आवश्यक है (प्रेरितों 8:22)। परन्तु यदि ज्योति में चल रहा है तो वह लगातार मन फिरा रहा है। बेशक इस संदर्भ में यूहन्ना कहता है, "यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है" (1 यूहन्ना 1:9)। पर यदि कोई मसीही जयोति में चल रहा है, तो वह उन लोगों में जिनकी उसे चिंता है अपने पापों का अंगीकार लगातार कर रहा होगा। "प्रार्थना का क्या हुआ? क्या मसीही व्यक्ति को क्षमा मे लिए प्रार्थना करने की आवश्यकता नहीं?" बेशक है (प्रेरितों 8:22)। परन्तु मसीही व्यक्ति जो ज्योति में चल रहा है निरंतर क्षमा के लिए प्रार्थना कर रहा होगा। इसलिए "ज्योति में चलना" में मन फिराना, पाप को मान लेना और क्षमा के लिए प्रार्थना करना शामिल होगा। इस कारण मसीही व्यक्ति के रूप में क्षमा पाने के लिए किए जाने के लिए तीन बातें नहीं है। केवल एक ही बात आवश्यक है "ज्योति में चलना।"

परन्तु "ज्योति में चलना" का क्या अर्थ है? इसका अर्थ "पाप रहित जीवन" बिताना नहीं है। यदि इसका अर्थ "पाप रहित जीवन बिताना" होता तो यूहन्ना ने कहना था, "यदि हम पाप रहित जीवन बिताते हैं, तो यीशु का लहू हमें हमारे पापें से शुद्ध करता है।" परन्तु यदि हम पाप रहित जीवन बिता रहे होते, तो हमारे अन्दर कोई पाप न होता जिसके लिए क्षमा मांगने की आवश्यकता पड़ती। इसलिए "ज्योति में चलना" का अर्थ पाप रहित जीवन बिताना नहीं हो सकता।

तो फिर इसका क्या अर्थ है? मुझे लगता है कि इसका अर्थ केवल परमेश्वर के वचन को रोशनी के अनुसार जीवन बिताने की ईमानदार कोशिश करना हो सकता है।

"ईमानदार कोशिश करना" ज्योति में चलने के लिए मुख्य बात है। मसीही व्यक्ति पाप रहित जीवन नहीं बिताता, परन्तु अपनी ही परिस्थितियों में परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने की पूरी कोशिश करते हुए वह प्रयास करता रहता है। कई बार वह

ठोकर खाता है, परन्तु वह उसी लक्ष्य को पाने के लिए काम करता रहता है। यदि वह ऐसा करता है तो हमारा मानना है कि परमेश्वर उसे "ज्योति में चलते हुए" के रूप में मान लेता है।

यदि हम "ज्योति में चल रहे" हैं तो हमें यह प्रतिज्ञा मिली है, "उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब प्रकार के पापों से शुद्ध करता है।" यहाँ पर फिर से क्रिया के वर्तमान काल का इस्तेमाल हुआ है यानी कार्य किए जाने के निरंतर पहलू पर जोर दिया गया है। हम इसका अनुवाद इस प्रकार से कर सकते हैं, "यदि हम ज्योति में चलना जारी रखते हैं, अर्थात एक दूसरे के साथ सहभागिता करना जारी रखते हैं, तो यीशु का लहू हमें लगातार हमारे हर पाप से शुद्ध करता रहता है।" मसीही होने के नाते हम ज्योति में चलते हैं यानी मसीह के शुद्ध करने वाले लहू के फव्वारे के नीचे रहते हैं। जैसे ही हम पाप करते हैं, यीशु का लहू हमें शुद्ध कर देता है और परमेश्वर हमें क्षमा कर देता है।

इसका अर्थ यह हुआ है कि यदि मैं ईमानदारी से परमेश्वर की इच्छा को पूरी करने की कोशिश करने वाला मसीही हूं, तो मुझे चिंता करने की आवश्यकता नहीं है कि किसी दिन यदि मेरे मन में बुरा विचार आया और मुझे हार्ट अटैक हुआ और मैं क्षमा के लिए प्रार्थना करने से पहले मन गया तो पाप के लिए प्रार्थना न किए जाने के कारण मैं नरक में चला जाऊंगा। बल्कि यह जानकर कि उसकी आज्ञा मानने की कोशिश करते रहने के कारण, मैं निरंतर आनन्द कर सकता हूं कि यीशु मसीह मेरे पापों को लगातार क्षमा कर रहा है और मैं यह पक्का जान सकता हूं कि मैं स्वर्ग में ही जा रहा हूं।

हर बात में परमेश्वर को महिमा दो

(1 पतरस 4:1-11)

डुएन वार्डन

समझें कि सब बातों का अंत तुरंत होने वाला है (4:7-11)

मसीही लोग केवल प्रभु के वापस आने की राह ही नहीं देखते, बल्कि वे उसकी स्पष्ट वापसी की राह देखते है। ऐसा आरंभ से है। पौलुस ने 1 कुरिन्थियों की समाप्ति दो आरामी शब्दों माराना था, जिसका अर्थ है "हे प्रभु, आ" से की। बाइबल की अंतिम पुस्तक के अंतिम शब्दों में ये शब्द पाए जाते हैं, "हे प्रभु यीशु आ" (प्रकाशितवाक्य 22:20)। पौलुस ने कहा, "हे भाइयो, मैं यह कहता हूं कि समय कम किया गया है" (1 कुरिन्थियों 7:29)। याकूब ने जोड़ा है, "अपने हृदय को दृढ़ करो क्योंकि प्रभु का शुभ आगमन निकट है" (याकूब 5:8)। जब आरंभिक कलीसिया प्रभु की स्पष्ट वापसी की राह देख रही थी, तो वही कर रहे थे, जो यीशु ने उन्हें करने को कहा था। उसने उनसे कहा था, "क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस दिन आएगा" (मत्ती 24:42)।

लगभग दो हजार साल बीत चुके हैं और उसकी कलीसिया आज भी गा रही है, "यीशु जल्द आने वाला है।" कलीसिया एक "युगांत विज्ञानी समुदाय" है, जिसका अर्थ

है कि यह आरंभ से ही समय के अंत में रहती है। यह कोरी कल्पना नहीं है कि प्रभु एक दिन आएगा, जो मसीही जीवन को एक सामर्थ देती है। यह "सब बातों का अंत तुरंत होने वाला है" (4:7)। अवश्य मानने वाली बातों को मानने की अनिर्वायता को सामर्थ इसी अहसास से मिलती है।

सचेत रहो: यीशु दुष्टात्मा से ग्रस्त एक आदमी को चंगा करने के बाद, मरकुस ने लिखा कि नगर के लोग यह देखने के लिए आए कि क्या हुआ है। जब वे वहाँ पहुंचे तो उन्होंने उस आदमी को जिसमें दुष्टात्माओं की सेना थी "कपड़े पहिने और सचेत बैठे" (मरकुस 5:15) पाया। अनुवादित शब्द "सचेत बैठै" वही शब्द है, जिसका अनुवाद 4:7 में "सचेत रहो" या "स्पष्ट सोच रखो" पतरस अपने पाठकों से अपने सचेत मनों में विवेकी, दृढ़ विश्वसनीय बनने का आग्रह कर रहा था।

यह समझ आने पर कि सब बातों का समय निकट है हमें "संयमी होकर प्रार्थना के लिए सचेत रहना" आवश्यक है। एक मसीही के रूप में इन शब्दों में एक गंभीर अर्थात जीवन का तर्कसंगत डर है। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक व्राइटिज ऑफ रिलिजियस एक्सपीरियंस में ढूंढा कि धार्मिक होने का क्या अर्थ है। कई बातों को अलग करने और उनकी समीक्षा करने के बाद उसने जोड़ा कि धर्म का एक आवश्यक गुण है कि यह स्वयं को गंभीरता से लेता है। मसीहियत एक फीका धर्म नहीं है बल्कि यह अपने संदेश अपनी उम्मीदों अपनी आशाओं और अपने भय को गंभीरता से लेता है। ऐसा झुकाव इसे स्वाभाविक रूप से प्रार्थना की ओर ले जाता है, क्योंकि प्रार्थना धर्म का विशुद्धतम रूप है।

एक-दूसरे से उत्सापूर्वक प्रेम करें: प्रेम की कोई परिभाषा नहीं हैं इसमें भावना का वह बंधन है, जो व्यक्ति को किसी दूसरे की भलाई चाहने के लिए समर्पित कर देता है और इसमें स्व-बलिदान करने वाले मन की उदारता मिलती है। इससे अधिक कहना कठिन है। एशिया की कलीसियाओं द्वारा सहे जाने वाले क्लेश और सताव के समय मसीही लोगों को एक-दूसरे से और प्रभु के साथ प्रेम के बंध में बने रहने का दबाव इससे बढ़कर कभी नहीं था। जब छोटी-छोटी चिड़चिड़ाहट और मानवीय दुर्बलताएं देह की एकता की परीक्षा ले रही थी, तो पतरस ने कहा कि, "प्रेम अनेक पापों को ढांप देता है" (4:8)।

सत्कारशील बनें: अजनबियों और अतिथियों के लिए घर और उन सब लोगों का पूरा अतिथि सत्कार करना प्राचीन काल से पूर्व के लोगों के लिए बड़ा पवित्रता भरा काम रहा है। उत्पत्ति 18:1-8 में अब्राहम के तम्बू के द्वार पर दो अजनबियों का मिलना इस कथा को बेहतर ढंग से दिखाता है। स्पष्टतया इब्रानियों की पुस्तक के लेखक के मन में यही घटना थी, जब उसने लिखा, "पहुनाई करना न भूलना, क्योंकि इसके द्वारा कितनों ने अनजाने, स्वर्गदूतों की पहुनाई की है" (इब्रानियों 13:2)।

4:9 में पतरस की इस ताड़ना से आरंभिक कलीसिया के भ्रमणशील शिक्षकों और नबियों की उपस्थिति लौट आई होगी। यूहन्ना के पत्र लिखे जाने के समय तक कलीसिया में भ्रह्मणीशल शिक्षकों का सत्कार करने वाला होने की मसीही जिम्मेदारी कलीसिया में एक मुद्दा बन चुका था। यूहन्ना ने चेतावनी दी कि बहुत से भविष्यवक्ता संसार में निकल आए थे (1 यूहन्ना 4:1)। यूहन्ना की दूसरी और तीसरी पत्री इस बात पर कि

मसीही लोगों को इन घुमक्कड़ नबियों की पहुनाई कब करनी चाहिए, और कब नहीं करनी चाहिए कुछ उलझन को दिखाती है।

परमेश्वर से मिले दान का इस्तेमाल करें: चाहे पतरस ने केवल दो दानों पर जो मसीही लोग पा सकते थे (अर्थात, बोलना और सेवा करना) पर ही विस्तार से बताया। परन्तु निःसंदेह उसे यह समझ थी कि और भी कई दान हैं। नये नियम की सबसे दृढ़ शिक्षाओं में से एक है कि मसीही लोगों को मिलने वाले तोड़े अलग-अलग होते हैं। परन्तु हमें जो भी तोड़ा मिला हो, उसे खुले मन से प्रभु को देना हमारी जिम्मेदारी है। इम इनमें से कुछ अधिक प्रसिद्ध आयतों की संक्षिप्त से लाभ ले सकते हैं।

लूका 12:48 में यीशु की चेतावनी हमारा ध्यान खींचती है, "जिसे बहुत दिया गया है उससे बहुत मांगा जाएगा।" लूका रचित सुसमाचार में मुहरों के दृष्टांत के बाद यह चेतावनी है (लूका 19:11-27) जबकि मसीह में हम इसे तोड़ों के दृष्टांत में देखते हैं (मत्ती 25:14-30)। इन दृष्टांतों के विवरण तो अलग है, पर संदेश वही है कि परमेश्वर द्वारा प्रभु की सेवा में दिए गए तोड़ों का इस्तेमाल न कर पाने से परमेश्वर के साथ हमारा संबंध बिगड़ता है।

रोमियों 12:6 में पौलुस ने लिखा, "उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न-भिन्न वरदान मिले हैं।" फिर उसने उन कुछ दानों के नाम बताएं, जो उसके पाठकों को मिले होंगे, और साथ ही उन्हें इस्तेमाल करने की जिम्मेदारी भी विस्तार से बताई। 1 कुरिन्थियों 12:4 में उसने कहा, "वरदान तो कई प्रकार के हैं, परन्तु आत्मा एक ही है।" 12:7 में उसने जोड़ा, "किन्तु सब के लाभ पहुंचाने के लिए हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है।"

4:10, 11 में अपने पाठकों के लिए पतरस के निर्देश में परमेश्वर द्वारा दिए गए तोड़ों के इस्तेमाल में मसीही जिम्मेदारी सिखाई गई है। दोनों दानों पर पतरस के निर्देश में अन्तर यह है कि उसने इस बात पर ध्यान दिलाया जिसे इन सब का सार माना जा सकता है, बोलना और सेवा करना। मसीही व्यक्ति के लिए जिसे बोलने का दान मिला था, पतरस ने उसकी जिम्मेदारी की गंभीरता पर जोर दिया, "ऐसे बोले, मानो परमेश्वर का वचन है" (4:11) में, "ऐसा बोले जैसे परमेश्वर की वाणी हो", "उसे इसे ऐसे बोलना चाहिए जैसे परमेश्वर का वचन बहा रहा हो" है। प्रचारक या शिक्षक जो परमेश्वर द्वारा प्रकट किए गए संदेश के अलावा किसी और संदेश पर निर्भर रहता है, वह प्रेरित के इन निर्देश की अवहेलना कर रहा है।

हर मसीही में सार्वजनिक रूप में बोलने या सिखाने की योग्यता नहीं होती, परन्तु हर कोई परमेश्वर और उसके लोगों की सेवा में कुछ योग्यता लगा सकता है। पतरस ने कहा, "यदि कोई सेवा करे तो उस शक्ति से करे जो परमेश्वर देता है" (4:11)। "सेवा" का अनुवादित शब्द "डीकन" के लिए यूनानी शब्दी के क्रिया रूप से लिया गया है, परन्तु पतरस ने अपनी टिप्पणियां डीकनों की जिम्मेदारियों तक सीमित नहीं रखी है। सेवा करना परमेश्वर के राज्य में बड़ा बनने के लिए रास्ता है (मत्ती 20:25, 26)। यदि हम परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहते है, तो हमें उस आशा की जो हमें मिली है दूसरों को समझाने के लिए जो भी तोड़े मिले हैं, उनका इस्तेमाल करना आवश्यक है।